Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

चीनी यात्रियों द्वारा वर्णित भारतीय समाज : एक अध्ययन

Kritika Pareek[1]* Dr. Shish Ram Boyat[2]

[1] Research Scholar, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Associate Professor, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan

सारांश - प्राचीन काल से ही भारत एक ऐसा देश रहा है जिसमें विदेशियों की रूचि रही है। वे भारत में धर्म, संस्कृति व साहित्य आदि को जानने के लिए समय-समय पर यहाँ आते रहे हैं। भारत में अनेक यात्री समय-समय पर आये हैं जिनका उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो, वे भारतीय समाज, संस्कृति व धर्म से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। उनके यात्रा विवरणों में इनका वर्णन सहज ही मिल जाता है। उन्होंने कोई अलग से भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था का वर्णन नहीं किया है बल्कि उनके यात्रा विवरणों के अध्ययन करने से उस समय के समाज व संस्कृति का पता चल जाता है। भारत आने वाले चीनी यात्रियों ने भारत के बारे में कुछ न कुछ अवश्य लिखा है। भारत सम्बन्धी विवरणों से हमें तत्कालीन भारत के सामाजिक जीवन के विषय में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होती है। फाह्यान ने अपने यात्रा विवरण में अपना ध्यान अधिकांशतः धार्मिक स्थलों के विवरण एवं वहां की धार्मिक स्थिति पर ही केन्द्रित किया है। परन्तु उसके विवरणों में थोड़ी जानकारी भारतीय लोगों के सामाजिक जीवन की भी मिलती है।

---------------------------------x---------------------------------

वर्ण व्यवस्था:

फाह्यान के समय भारतीय समाज मुख्य रूप से चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित था। इसके अतिरिक्त अनेक मिश्रित और निम्न जातियाँ भी समाज में रहती थी।। फाह्यान ने ऐसी ही चाण्डाल जाति का उल्लेख किया है जो नगर के बाहर निवास करते थे। ये नगर अथवा बाजार में प्रवेश करते समय लकड़ी बजाकर अपने आने की सूचना देते थे, ताकि लोग उनसे दूर रहें और कोई उन्हें छूकर अपवित्र न हो जाए। ये लोग चाण्डाल, बहेलिये और मछली माने का कार्य भी करते थे।[1] ऐसी ही मिश्रित जातियों का विवरण ह्वेन-सांग ने भी दिया है। ये जातियों जिनमें कसाई, नर्तक आदि प्रमुख थे, नगर से बाहर रहते थे। नगर में प्रवेश करते समय से लेकर घर वापसी तक वे मार्ग के बाईं ओर चलते थे।[2] ये लोग पशुओं को मारकर उनका मांस बेचते थे। बधिक का कार्य भी करते थे और विष्ठा आदि भी उठाते थे। बाण ने कादम्बरी में इन जातियों को स्पर्श वर्जित'कहने के साथ-साथ बांस की छड़ी बजाकर अपने आने की सूचना देने वाला निर्दिष्ट किया है।[3]

प्रस्तावना

फाह्यान के विपरीत ह्वेनसांग ने भारतीय वर्ण व्यवस्था का अधिक उल्लेख किया है तथा इन वर्णों के प्रधान कार्यों का भी अधिक उल्लेख किया है। उसके अनुसार समाज चार वर्णों में बंटा था।[4] इन वर्णों अथवा श्रेणियों में ब्राह्मणों का सर्वाधिक सम्मानित और पवित्र स्थान था। जिनकी ख्याति और व्यापकता के कारण भारत को ब्राह्मण देश भी कहा जाता था।[5] बाण के अनुसार असंस्कृत बुद्धि वाला ब्राह्मण जन्म से ब्राह्मण होने के कारण माननीय था।[6]

समाज का दूसरा वर्ण क्षत्रियों का था। ह्वेनसांग ने क्षत्रियों को कर्मनिष्ठा की भूरी-भूरी प्रंशसा की है। उसने उन्हें सीधा-सादा,

[1] एस॰ बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ़ व वैस्ट्रन वल्ड,, पृ॰ 38

[2] थामस वाटर्स, युवानच्वांग ट्रैवल्स इन इंडिया-, पृ॰ 47

[3] बाणभट्ट, कादम्बरी, पृ॰ 21,25

[4] एस॰ बील, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 85

[5] वही, पृ॰ 69, थामस वाटर्स, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 140

[6] हर्षचरित, असंस्कृतमतयोपि जात्येव द्विजन्माना माननीया, पृ॰ 18

www.ignited.in

पवित्र, सरल और मितव्ययी कहा है। क्षत्रिय राजन्य वर्ग से सम्बन्ध रखते थे जो पीढ़ियों से शासन करते आ रहे थे।[7] बाण ने भी सूर्य और चन्द्र नामक दो क्षत्रिय वंशों का उल्लेख किया है।[8] थानेश्वर के क्षत्रियों को वह शास्त्रोपजीवी बताता है।[9] वे परोपकारी और दयालु प्रवृति के थे। तीसरा वर्ण वैश्यों का था। जो मुख्यतः व्यापारी थे और इस उद्देश्य के लिए दूर देशों के लिए जाते थे।[10] यह वर्ण भी काफी सम्मानित व सम्पन्न था। चैथा वर्ण शूद्रों का था जिन्हें ह्यूनसांग ने कृषक बताया है। इस वर्णक्रम के विषय में Watters लिखते हैं “Hieun-Tsang here puts the castes in the order given in Brahmanical Books, but in the Buddhist scripture the Ksatrias are usually placed above the Brahminis. Our pilgrim, it will be noticed, makes the Sudras to the farmers. But in Manu and in same Buddhist works, the vaisyas are farmers and the business of the Sudras is to be serve the three castes above them.”[11]

ह्वेन-सांग बताता है कि भारतीय समाज चार वर्णों में बंटा हुआ था जिनमें प्रथम ब्राह्मण थे। वह भारत को ब्राह्मणों का देश कहता है। आगे कहता है कि वे शुद्ध आचरण वाले पुरूष हैं।[12] ये अपनी रक्षा धर्म के बल से करते हैं और अत्यन्त शुद्ध सिद्धान्तों को मानने वाले हैं। वह ब्राह्मणों के खान-पान के सम्बन्ध में कट्टरता का भी उल्लेख करता है।[13] वर्ण व्यवस्था में दूसरे स्थान पर क्षत्रियों का उल्लेख करता है। वह उनके बारे में कहता है कि ये राजवंशी हैं। सैंकड़ों वर्षों से ये राज्यधिकारी होते चले आए हैं। ये धार्मिक और दयालु हैं। ह्वेनसांग के विवरण से ही पता चलता है कि क्षत्रियों के अलावा भी कई जगह अन्य वर्णों द्वारा शासन होता है जिनमें वह बताता है कि कान्यकुब्ज का शासन वैश्य जाति का है[14] और सिन्ध का शासन शूद्र जाति का है।[15] इससे पता चलता है कि क्षत्रिय जाति या वर्ण के अलावा अन्य वर्ण के लोग भी शासन की बागडोर सम्भाल सकते थे। वर्णव्यवस्था में आगे वह तीसरे स्थान पर वैश्यों को बताता है। इनका मुख्य कार्य व्यापार करना है। ये देश के अन्दर व बाहर दोनों जगह व्यापार करते थे। यह वर्ग अत्यधिक धन सम्पन्न होता था। इस वर्ग से राजा भी धन ब्याज पर लेता था। चैथे वर्ण में वह शूद्रों का वर्णन करता है। ह्वेनसांग के अनुसार परस्पर वैवाहिक सम्बन्धों के कारण मिश्रित जातियों का सामाजिक स्तर क्रमशः उच्च अथवा निम्न होता रहता था, लेकिन समाज में शूद्रों की दशा सन्तोषजनक थी क्योंकि उन्हें तीनों वर्णों की सेवा की तथा कृषि का कार्य भी किया। उसने मतिपुर व सिन्ध के शासक को शूद्र बताया है। उसके ये विवरण शूद्रों की उच्च स्थिति का भान कराते हैं।

इसके अलावा ह्वेनसांग अनेक उपजातियों व मिश्रित जातियों में कसाई, मछुआरे, नृतक, जल्लाद व मेहत्तर आदि का वर्णन करता हैं।[16]

इसके साथ-साथ ह्वेनसांग चाण्डाल व नट आदि अछूत लोगों का भी वर्णन करता है। ये गांव या नगर से बाहर रहते थे तथा इनके मकान फूस के बने होते थे। इन लोगों को हम भारतीय शब्दों में अन्त्यज स्वीकार करेंगे।[17]

स्त्रियों की दशा एवं विवाह:

फाह्यान के विवरण भारत में स्त्री दशा एवं विवाह आदि प्रथाओं पर प्रकाश नहीं डालते। लेकिन ह्वेन सांग के विवरणों से पता चलता है कि समाज में स्त्रियों का सम्मानीय स्थान था। लेकिन मूलस्थानपुर के सूर्य मन्दिर के भ्रमण के समय उसने वहां मन्दिर में नृत्यगान में व्यस्त अनेक स्त्रियों को देखा था। वह लिखता है:

There is a temple dedicated to the sun, very manginicant and profusely decorated. The image of sun-deva is caste in yellow gold and ornamental with rare gems. Women play their music, light their torches, offer their flowers and perfumes to honour it.[18] उसका यह वर्णन पश्चिमोत्तर भारत में स्थित देवदासी प्रथा का आभास देता है। ह्वेनसांग के अनुसार भारत में निकट सम्बन्धों में विवाह वर्जित थे। विधवा स्त्री पुनः विवाह नहीं कर सकती थी।[19]

ह्वेनसांग कहता है कि एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं करते थे। समाज में बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी। उदाहरण स्वरूप राज्यश्री का बाल विवाह प्रभाकर वर्मन ने अल्पायु में ही कर दिया था।[20] समाज में अनुलोम विवाह भी प्रचलित थे व विलोम विवाह भी होते थे। समाज में इस समय बहु विवाह की प्रथा भी प्रचलित थी।

---

[7] सेमुअल बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड आॅफ वैस्टर्न वल्ड, पृ॰ 82
[8] हर्षचरित, सर्ग 1, पृ॰ 11
[9] हर्षचरित, सर्ग 1, पृ॰ 43-44
[10] थामस वाटर्स, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 168
[11] वही, पृ॰ 169
[12] ठाकुर प्रसाद शर्मा, ह्वेनसांग की भारत यात्रा, पृ॰ 43
[13] डी॰एन॰ झा॰, प्राचीन भारत का इतिहास, पृ॰ 38
[14] सेमुअल बील, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 82
[15] ठाकुर प्रसाद शर्मा, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 415
[16] वही, पृ॰ 41
[17] विशुद्धानन्द पाठक, पांचवीसातवीं शताब्दी का भारत-, पृ॰ 50
[18] सैमुअल बील, पूर्वोद्धृत, खण्ड दो, पृ॰ 274
[19] थामस वाटर्स, पूर्वोद्धृत, खण्ड एक, पृ॰ 168
[20] एस॰एल॰ नागौरी, प्राचीन भारत, नृ॰ 335

ह्वेनसांग के अनुसार स्त्रियों की दशा अच्छी थी। उनकी शिक्षा पर अब भी ध्यान दिया जाता था। वे साहित्य, संगीत एवं कला में भी प्रवीण होती थी। हर्ष की बहन राज्यश्री सुशिक्षित थी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ह्वेनसांग ने उच्च वर्ग की स्त्रियों के बारे में ही कहा है। क्योंकि इस समय स्त्रियों की शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। इस समय पर्दा प्रथा भी नहीं थी। हर्ष की बहन राज्यश्री ने बिना पर्दा किए चीनी यात्री के उपदेशों को सुना था।[21]

वस्त्र आभूषण एवं केश-विन्यास:

फाह्यान का वृतान्त भारतीयों की वेश-भूषा और पहनावे के विषय में स्पष्ट उल्लेख नहीं करता, लेकिन ह्वेनसांग ने इस विषय में विस्तृत जानकारी दी है। उसके अनुसार भारत में लोग अधिकांशतः श्वेत वस्त्र पहनते थे[22] जबकि रंगीन वस्त्रों में लाल रंग के वस्त्र अधिक पहने जाते थे। वस्त्र, सूती, ऊनी, रेशमी सभी प्रकार के होते थे। पुरूष सिले हुए वस्त्र नहीं पहनते थे।[23] वे प्रायः धोती पहनते थे। कुछ पुरूष मूछें रखते थे कुछ नहीं। स्त्रियाँ जमीन को छूता हुआ वस्त्र पहनती थी। वे बालों को विभिन्न तरीकों से सजाती थी।[24] पुरूष और स्त्रियां दोनों आभूषण पहनते थे। ह्वेनसांग ने समाज के कुछ विशेष वर्गों के पहनावे और वेशभूषा का वर्णन किया है। उसके अनुसार ब्राह्मण और क्षत्रिय स्वच्छ वस्त्र पहनते थे। कुछ लोग मोर पंख धारण करते थे, और कुछ नरमुण्डों की माला पहनते थे, कुछ वस्त्रहीन रहते थे। कुछ वृक्ष के पत्तों एवं उसकी छाल को शरीर ढंकने के लिए प्रयोग करते थे। श्रमणों के वस्त्र पीले या लाल रंग के होते थे तथा राजन्य वर्ग कीमती वस्त्र पहनता था।

उनके आभूषण कीमती रत्नों से जड़े होते थे। यह वर्ग केशों को सजाने के लिए फूलों का प्रयोग करता था। भुजाओं में भुजबन्द और गले में विभिन्न प्रकार के हारों का प्रयोग करते थे। भारत में वैश्य तथा व्यापारी वर्ग भी धनी होने के कारण बहुमूल्य वस्त्र पहनता था। वे कानों में स्वर्ण कुंडल और गले में स्वर्ण माला पहनता था। समाज में स्त्रियाँ भी विभिन्न प्रकार के आभूषणों का प्रयोग करती थी। हर्षकालीन स्त्रियों की रूचि अलंकारों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक थी। वे अपने शरीर को विभिन्न प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित करती थी। पैरों में घुंघरू अथवा पाजेब पहनती थी।[25] उनके पैर प्रायः नुपुरों से सुसज्जित होते थे, वक्षस्थल आकर्षक हीरों से, कान कुण्डल से, भुजाएं भुजबन्दों से तथा केश स्वास्तिकों से सजे होते थे। उनके हार प्रायः स्वर्ण, मोती, मुक्ता एवं रत्नों से बने होते थे।[26]

आगे ह्वेनसांग ऋतुओं, सम्पन्न अथवा असम्पन्न परिवारों, हिन्दुओं, बौद्ध उपासकों, बौद्ध-भिक्षुओं, क्षौभ धारकों, बल्कल धारियों, निग्रन्थों आदि के अलग-अलग पहनावों और केश पद्धतियों की चर्चा करता है। बौद्ध धर्म के विभिन्न मतावलम्बी विविध प्रकार के कपड़े और आभूषण धारण करते हैं। कुछ मोरपंख को पहनते हैं कुछ लोग भूषण के समान खोपड़ी की हड्डियों की माला गले में धारण करते हैं। कुछ लोग वस्त्र धारण नहीं करते और नंगे रहते हैं। कुछ लोग छाल और पत्तोंके वस्त्र धारण करते हैं।[27]

श्रमण लोगों के वस्त्र तीन प्रकार के होते हैं : 1. सघांती 2. संकाक्षिका 3. निवासन। इन तीनों की बनावट एक जैसी नहीं है बल्कि सम्प्रदाय के अनुसार होती है। कुछ के चैड़े या पतले किनारे होते हैं, कुछ के छोटे या बड़े होते हैं। संकाक्षिका कंधे ढके रहता है और दोनों बगलों को बन्द कर लेता है। यह बाईं ओर खुला और दाईं ओर बन्द पहना जाता है तथा कमर के नीचे तक बना हुआ होता है। सम्प्रदाय के अनुसार वस्त्रों का रंग भिन्न-भिन्न होता है। लाल और पीला दोनों रंग काम में आते हैं।[28]

क्षत्रियों व ब्राह्मणों के वस्त्र स्वच्छ व आरोग्यवर्धक होते हैं। साधारण गृहस्थों के वस्त्रों में सफाई होती है और वे सुन्दर लगते हैं। वे किफायत सार होते हैं और सदा वैसे ही रहते हैं जैसे अपने घर दरवाजों पर। राजा और मन्त्रिगण अलग प्रकार के कपड़े धारण करते हैं। वे सिर पर सुन्दरता बढ़ाने वाले फूल, आभूषित टोपियाँ, हाथों में कड़े और गले में मालाएँ धारण करते हैं।[29] धनी व्यापारी सोने के आभूषणों का व्यापार करते हैं और प्रायः सभी व्यापारी नंगे पैर रहते हैं। कुछ ही चप्पल-जूतों का प्रयोग करते हैं। बहुत कम खड़ाऊ पहनते हैं। अपने दांतों को लाल व काले रंगते हैं। बालों का ऊपर बाँधते हैं और कानों को छेद लेते

[21] वही, पृ॰ 335
[22] सैमुअल बील, पूर्वोद्धृत, खण्ड दो, पृ॰ 75
[23] थामस वाटर्स, पूर्वोद्धृत, खण्ड एक, पृ॰ 148
[24] सैमुअल बील, पूर्वोद्धृत, खण्ड दो, पृ॰ 75
[25] नागानन्द, 2.13, रत्नावली, पृ॰ 17
[26] नागानन्द, 2.12, रत्नावली, पृ॰ 25, 276, 318
[27] विशुद्धानन्द पाठक, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 40
[28] ठाकुर प्रसाद शर्मा, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 39
[29] विशुद्धानन्द पाठक, पूर्वोद्धृत, पृ॰ 57

हैं। इन लोगों की नाक बहुत सुन्दर और आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं।[30]

खान-पान:

फाह्यान ने 5वीं शताब्दी के आरम्भ में जब भारत भ्रमण किया तो मध्य देश के लोग किसी जीव का वध नहीं करते थे। भारत में लोग मांस, मदिरा, प्याज और लहसुन का प्रयोग नहीं करते थे। ये वस्तुएँ केवल चाण्डाल लोग ही प्रयोग करते थे। यहाँ बाजारों में कसाई और मदिरा की दुकानें नहीं थी। लोग सुअर और मुर्गे नहीं पालते थे।[31]

उपरोक्त वर्णन सम्भवतः गुप्तकालीन उच्च वर्गीय हिन्दुओं के खान-पान पर आधारित है, जो अधिकांशतः शाकाहारी था। समाज में हिन्दु, बौद्ध और जैन मत को मानने वाले लोग अहिंसा का भाव रखते थे। मध्य देश के लोग मदिरा पान नहीं करते थे। संभवतः यह कथन बौद्ध मत से प्रभावित प्रतीत होता है, क्योंकि बौद्ध मतावलम्बी मदिरापान को निषिद्ध मानते थे।

ह्वेनसांग ने भी विभिन्न प्रदेशों में पाए जाने वाले फलों और खाद्य, पदार्थों का उल्लेख किया है। खान-पान में दूध, मक्खन, घी, दानेदार चीनी, रोटी का प्रयोग होता था।[32] मछली, भेड़ व हिरण का मांस कभी-कभी स्वादिष्ट भोजन के रूप में खाया जाता था।[33] ह्वेनसांग बताता है कि उस समय भारतीय जौ व धान का सेवन अधिक करते थे। खाने में गेहूँ की रोटियाँ, चावल, दूध, घी, मक्खन, दही, सब्जी, फल आदि का प्रयोग करते थे। फलों में तरबूज, खरबूजा, नींबू व आम का प्रयोग होता था। भारतीय लोग शाकाहारी व मांसाहारी दोनों प्रकार के थे। भेड़ के मांस, मृगशावक और हिरण के मांस को ज्यादा पसन्द किया जाता था जबकि बैल, गधे, कुत्तों और बन्दर के मांस खाने पर प्रतिबन्ध था।[34] जो लोग इन्हें खाते थे उनसे घृणा की जाती थी और देश भर में उनकी अप्रतिष्ठा होती थी।

शराब का सेवन भी किया जाता था। अंगूर व गन्ने का रस क्षत्रिय लोग पीते हैं। ब्राह्मण और श्रमण अंगूर और गन्ने से बना एक प्रकार का शरबत पीते हैं जो शराब की भांति नहीं होता।[35]

[30] सैमुअल बील, पूर्वोद्धृत, खण्ड दो, पृ॰ 76
[31] जेम्स लेग्गे, ट्रैवल्स ऑफ़ फाह्यान, खण्ड एक, पृ॰ 43
[32] सैमुअल बील, पूर्वोद्धृत, खण्ड दो, पृ॰ 83
[33] थामस वाटर्स, पूर्वोद्धृत, खण्ड एक, पृ॰ 178
[34] एस॰एल॰ नागौरी, प्राचीन भारत, पृ॰ 336
[35] सैमुअल बील, पूर्वोद्धृत, खण्ड दो, पृ॰ 89

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कनिंघम] ए. (1979). प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल] इलाहाबाद, 1979

झा, डी.एन. कृष्णमोहन, श्री माली (1985). प्राचीन भारत का इतिहास बुद्धिज्म इन, क्लासीकल ऐज, दिल्ली] 1985

पाण्डेय, वी.सी. (2014). प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2014

पाठक, विशुद्धानन्द, बील, सैमुअल (1995). पांचवीं-सातवीं शताब्दी का भारत बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ़ द वेस्ट्न वल्र्ड, दिल्ली, 1995

Corresponding Author

Kritika Pareek*

Research Scholar, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan

E-Mail – kritikapareek17680@gmail.com